॥ ओ ३ म् ॥
॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

आर्य प्रेमी

वर्ष २०, अङ्क १ } दयानन्दाब्द १४८ { एक प्रति २५ पैसे
फरवरी १९७२ } सृष्टि सं० १,९७,२९,४९०७२ { वार्षिक शुल्क ३)

वेद सुधा—

गुर मन्त्र गायत्री मन्त्र

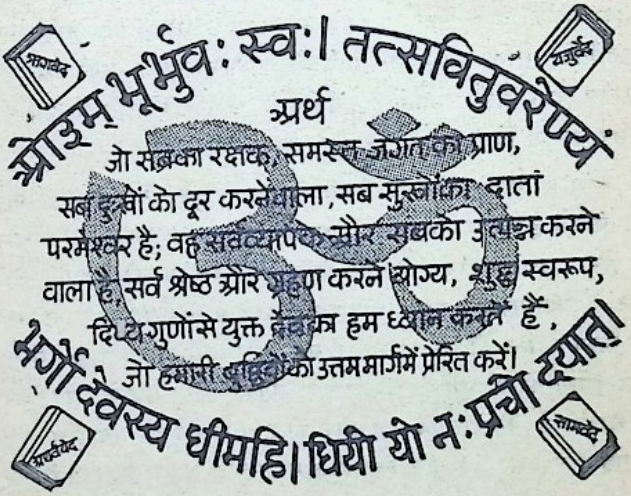
ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं
अर्थ
जो सबका रक्षक, समस्त जगत का प्राण,
सब दुःखों को दूर करने वाला, सब सुखों का दाता
परमेश्वर है; वह सर्वव्यापक और सबको उत्पन्न करने
वाला है, सर्व श्रेष्ठ और ग्रहण करने योग्य, शुद्ध स्वरूप,
दिव्य गुणोंसे युक्त है उस का हम ध्यान करते हैं,
जो हमारी बुद्धियों को उत्तम मार्गमें प्रेरित करें।
भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

"ओ३म्" सच्चिदानन्द ब्रह्म व्यापक नामी है।
"भूः" अस्तित्व निकन्द, "भुवः" चेतन स्वामी है॥
"स्वः" आनन्द स्वरूप जगत् जनिता, "सविता" है।
"देव" दिव्य गुण रूप, "वरेण्यम्" वन्द्य पिता है॥
उस "भर्ग" रूप भगवान का, ध्यान आज हम सब धरें।
प्रभुवर। प्रेरण गुरु ज्ञान का, बुद्धि हमारी में करें॥

मतीय दृष्टिकोण—सभी विषमता की नींव पर खडी हैं। उसके जीवन के किसी भी अंग पर साम्यभावना की दिव्य चेतना का अमर प्रभाव नहीं पडा है। तो ऐसी अपूर्ण योजना के विस्तार से मानव अपनी मानवता की रक्षा कर पाएगा यह कहना कठिन है।

महर्षि यास्काचार्य ने मनुष्य की परिभाषा करते हुए कहा है—"मनुष्याः कस्मात, मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति" अर्थात् समझ बूझ कर कार्य करने वाले मानव हैं। मानव को मननशील होना चाहिए। परन्तु आज की स्थिति क्या है? उसने अपने विवेक को पूर्ण रूप से तिलांजलि दे रखी है। हर जगह उच्चनीच का झगड़ा, मेरा तेरा की छीना झपटी, धनी दरिद्र का टंटा, साम्प्रदायिकता का नगा नाच,रोगियों का हाहाकार, भूखों का चीत्कार, दुखी लोगों की अश्रुधारा की वाहिनी में हजारों निरपराध नरनारियों के खून की बाढ! यदि यही मानवता है तो पशुत्व का नाम कहीं दुनिया में मिल ही नहीं सकेगा।

इस समूचे पतन का सच्चा कारण न ढूंढकर केवल बाह्य लक्षणों को पहचान कर इलाज करने के लिए तैयार हो जाना केवल दुःसाहस ही होगा। मानव के हृदय में छिपा हुआ स्वार्थ ही पतन का सच्चा कारण है। मानव का व्यष्टि जीवन और क्या समष्टि जीवन, दोनों ही स्वार्थ के कीचड से सने हुए हैं। स्वार्थ आज विराट् रूप धारण कर प्रलय का ताण्डव नृत्य कर रहा है। यदि यह स्वार्थ इसी तरह बढ़ता गया तो समझ लीजिए कि वह दिन दूर नहीं होगा जिस दिन मानव की संस्कृति, सभ्यता एवं मानवता बोरिया बिस्तरा बांध कर इस दुनिया से कूच कर जाएगी।

और भी एक सच्चाई है। स्वार्थ रहित प्राणी तो कोई नहीं है। धर्मशास्त्रों में तो 'स्व' शब्द आत्मा का पर्यायवाची है। जब तक आत्मा रहेगी तब तक (स्व) भी रहेगा। स्व भी आत्मा जितना ही अजर एवं अमर है। जब ऐसा है तो चेतन प्राणी का स्वार्थ से दूर हो जाना

वेद का सन्देश

लेखक : मञ्जुनाथ शास्त्री, प्रधानाध्यापक डी. ए. वी. उ. मा. विद्यालय अजमेर

मानव मात्र की सर्वतोमुखी उन्नति से बढकर कोई कल्पना आज तक शायद किसी भी आदर्शवादी के मस्तिष्क में उपजी नहीं होगी। मानव मात्र की यह उन्नति ही विश्व शान्ति का एक मात्र आधार है। मानव की इस सर्वतोमुखी उन्नति में ही प्राणिमात्र का हित निहित है। क्योंकि यह उन्नति केवल भौतिक नहीं, केवल सामाजिक नहीं। न राजनीतिक, आर्थिक या साम्प्रदायिक ही है। इन सबको अपने अन्दर संनिहित करने वाली उन्नति ही सर्वतोमुखी उन्नति है आत्मिक पथ में अग्रसर उन्नति किसी को पीडित करके प्राप्त नहीं होती।

आज का संसार किस परिस्थिति में होकर गुजर रहा है यह सभी लोग जानते हैं। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को, एक जाति दूसरी जाति को, एक समाज दूसरे समाज को, एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को विश्वास की दृष्टि से नहीं देखता। इस पारस्परिक अविश्वास की चट्टान से टकरा कर विश्व शान्ति की उन्नत मीनारें सब धराशायी हो जाती हैं। लीग आफ नेशन्स की समाधि पर बनाये गये संयुक्त राष्ट्र संघ के भवन में भी आपसी वैर विरोध एवं एक दूसरे की टांग खींचने की मनोवृत्ति ही दिखाई दे रही है। विश्व शान्ति का अमर सन्देश वाहक मधुर समीरण का प्रवेश वहां नहीं है। जब संयुक्त राष्ट्र ही इस प्रकार एक कुरुक्षेत्र का मैदान बन गया है तो वहां से शान्ति का स्रोत बह निकलेगा—इस बात पर विश्वास करना साहस की ही बात है।

आज के दिन मानव प्रत्येक क्षेत्र में घोर अधः पतन की भीषण दुरवस्था में अस्तव्यस्त होकर छटपटा रहा है। उसकी राजनीतिक कल्पना, राष्ट्रीय भावना, आर्थिक योजना, सामाजिक व्यवस्था एवं

ये ही दो भावनाएं पश्चिमी और पूर्वी संस्कृति की आधार हैं। पाश्चात्य संस्कृति भौतिकता प्रधान है अतः देश काल और परिस्थिति की दृष्टि से परिमित है। प्राच्य संस्कृति आत्म प्रधान होने के कारण अनन्त है।

परम पिता जगदीश्वर पर आधारित संस्कृति यदि मानवमात्र के दिलों में रूढ मूल हो जाए तो पूर्व-पश्चिम, गोरे-काले, हिन्दू-गैर हिन्दू, देशी-विदेशी इन भेद भावों में बंटकर मानवजाति चकनाचूर नहीं हो सकेगी। भेद भावों के राक्षसी प्रहारों से क्षत विक्षत हो, पतन के गहरे गर्त में गिरकर दम तोडने की अवस्था में स्थित अभागी मानव जाति को यदि दुबारा ऊपर उठकर दिव्य जीवन प्राप्त करना हो तो उसे आत्मप्रधान, दिव्य, सार्वभौम वैदिक संस्कृति की शरण में आना ही होगा। इस संस्कृति का वर्णन यजुर्वेद ने इस प्रकार किया है—

ओ३म् अच्छिन्नस्यते देव सोम
सुवीर्यस्य ददितारः स्याम।
सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा
स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः ॥ ७। १४ ॥

'हे प्रेमस्वरूप जगत्पितः, अद्भुत बल, अमित ऐश्वर्य एवं अप्रतिम पुष्टि प्रदान करने वाली तुम्हारी अखण्ड शक्ति हमको मिले। वह जगत्पिता ही सर्वप्रथम, वरणीय एवं स्नेहसान्द्र एक मात्र नायक है। उसके अखण्ड ऐश्वर्य को लोक कल्याण के लिए देते जाना ही सर्वोत्तम सार्वभौम संस्कृति है।"

परमेश्वर ही हम सबका सर्वश्रेष्ठ, सर्वादरणीय, सर्वप्रिय नायक है। दुनिया का अद्भुत बल, ऐश्वर्य, पुष्टि ये सब उसके द्वारा ही उत्पन्न हुए हैं। हमारा उसमें कोई दखल नहीं। हम केवल भोक्ता बनकर इस जगत् में आये हैं। हमें शाश्वत रूप से रहना भी नहीं है। जब तक रहें तब तक अपनी समस्त शक्ति एकीकृत करके भगवान् की उन दिव्य

सम्भव नहीं है। तो फिर छुटकारा कैसे मिले ? क्या मानव की जीवन यात्रा की सफल परिसमाप्ति केवल मधुर कल्पना ही बनी रहेगी ?

इस जटिल प्रश्न का उत्तर है वेद का सन्देश। आज मानव का स्वार्थ बाह्य है। इसमें संकुचित भावना रहती है। क्योंकि बहिर्मुखी स्वार्थ बाह्य जगत से सम्बद्ध है। बाह्य जगत् सीमित है। इस सीमित वस्तु पर जब हजारों की लालची आंखें गड जाती हैं तब संघर्ष अनिवार्य हो जाता है एवं संकुचित भावना भी अनिवार्य है। जब हम स्वार्थ को दूर नहीं कर सकते तब संघर्ष से बचने का एक मात्र मार्ग है उस स्वार्थ को अन्तर्मुखी बनाना। दूसरे शब्दों में, उस स्वार्थ को आत्मिक बना देना चाहिए। सर्वान्तर्यामी विराट् आत्मा अनन्त है। उसकी तरफ चला हुआ स्वार्थ भी अनन्त ही होगा। इस तरह अनन्त स्वार्थ को चाहे जितने लोग अपने लिए ले लें वह अनन्त ही रहेगा। उससे फायदा न उठा सकने वाले कोई न रहेंगे। सभी लोग यथाशक्ति उसे अपना बना लेंगे और संघर्ष की कोई गुंजाइश ही नहीं रहेगी।

इस आत्मिक स्वार्थ का क्या स्वरूप है ? विराट् आत्मा की अद्भुत कृति है यह विराट् विश्व। हम सभी उस विराट् आत्मा की प्रिय सन्तान हैं। अर्थात् यह जगत् है हमारे पूजनीय पिता जगदीश्वर की देन। यह हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि यह हमारी सम्पत्ति होने पर भी आखिर जगत पिता की ही सम्पत्ति है। हम तो केवल भोग के अधिकारी हैं स्वामित्व के नहीं। जिसका निर्माण हमने नहीं किया उस पर हमारा स्वामित्व कैसे हो सकता है ? अतः सर्वपिता जगदीश्वर की इस सम्पत्ति को टुकड़े टुकड़े करके बांटने की घातक भावना हमारे मन में उत्पन्न नहीं होनी चाहिए। भौतिक स्वार्थ कहता है—'यह सारा जगत् मेरा है।" और आत्मिक स्वार्थ कहता है—"यह जगत् है तो मेरा परन्तु तीन तेरह करके बांटकर खाने के लिए नहीं, अपितु अपने पिता की रचना होने के कारण मेरा है साथ ही जगत् में स्थित जीवमात्र भी मेरे ही हैं।"

शक्तियों को जगत् के हितार्थ विनियोग करने के लिए तैयार रहकर विश्ववारा संस्कृति के उपासक बन जाएं ।

यह विश्ववारा संस्कृति है । देश भेद, वर्ण भेद, जाति भेद, वंश भेद, काल भेद, इनमें से एक को भी न मानकर सभी देशों पर सभी कालों में लागू होने योग्य सार्वभौम संस्कृति है आत्म प्रधान होने के कारण इसमें द्वेष के लिए रत्ती भर भी गुंजाइश नहीं है ।

त्यागपूर्वक योग प्रदान करने वाली उस दिव्य संस्कृति की शीतल छाया में आश्रय पाने पर ही मानव का हृदय विशाल बनता है । तभी उसे यह अनुभव होने लगता है कि अब तक जिसे मैं धर्म समझता था, अपितु वह केवल सम्प्रदाय था, मत था, वह मानव के लिए भूषण नहीं किन्तु भीषण अभिशाप था । इस सम्प्रदाय की संकुचित भावना रूपी अग्नि ने ही भगवान् बुद्ध, महात्मा जरदुश्त, सन्त ईसा, आदित्य ब्रह्मचारी वेद कानन विहारी प्रत्यक्षीकृत धर्मा दिव्यदर्शी महर्षि दयानन्द सरस्वती, कर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द, जगत्पूज्य दीनवत्सल करुणासागर महात्मा गान्धी प्रभृति नररत्नों की आहुति ली, इन कुत्सित सम्प्रदायों को कर्म का नाम देने के कारण आज धर्म ही परित्याज्य समझा जा रहा है । केवल धर्म कहीं नहीं, राजनीति, समाज सभी दूषित हुए हैं ।

विश्ववारा वैदिक संस्कृति को भूल कर छिन्न भिन्न होते हुए विश्व के हृदय विदारक दृश्य को देखकर उदारमना महर्षि दयानन्द से न रहा गया । अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन अनवरत रूप से करके,दसियों साल घन-घोर जंगलों में उग्र तप करके धर्म का साक्षात्कार कर महर्षि ने अपने ज्ञान नेत्रों से देख लिया कि परम वैज्ञानिक, बुद्धि संगत, तर्क शुद्ध, परमात्म प्रकीर्तित सार्वभौम वेद धर्म ही अशान्त विश्व के समस्त सन्ताप मिटा सकता है, शान्ति की संजीवनी बूटी पिला-सकता है । अतएव उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना की । आर्यसमाज कोई नया सम्प्रदाय नहीं है, यह विशुद्ध धर्म प्रतिपादक संस्था है ।

सर्वव्यापक, सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकर एवं निर्विकार परमात्मा की मानसिक उपासना, उस भगवान् की सन्तान होने के कारण सभी समान हैं—यह मानवीय भावना, त्याग पूर्वक भोग करना चाहिए—यह यज्ञीय भावना, विश्व यदि सुखी है तो मैं भी सुखी हूँ एवं परमात्मा के बच्चे होने के कारण सभी जीव मेरे हैं—यह आत्मिक स्वार्थ—ये ही विश्व शान्ति के मार्ग हैं। इन्हीं का प्रतिपादन वेद सृष्टि के प्रारम्भ से करते आये हैं। हमारे अमित तपोधन पूर्वज महर्षि लोग उसी उदात्त धर्म को वैदिक धर्म के नाम से प्रचार करते आये हैं।

नास्तिकतावाद के प्रबल प्रवाह में बहते जाने वाले पाश्चात्य संस्कृति के परम भक्तों का समूह एक तरफ है और दूसरी तरफ है घोर अन्ध श्रद्धा की खाई में गिरा हुआ अविद्या ग्रस्त मानवों का झुण्ड। इन दोनों के बीच ठहर कर दोनों आधे आधे मार्ग तक खींच लाकर श्रद्धा और मेधा—इन दोनों के संगम स्थान पर खड़ा करने के लिए हम वैदिक धर्मियों में महान् आचार बल, मनोबल, वाग्बल, तपोबल एवं आत्मबल की आवश्यकता है। परन्तु हमारे हाथों में जब तक वेद हैं वेदानुसार आचरण करके उपलब्ध आचार बल है तब तक हमें यह विश्वास है कि हम कठिन कार्य कर सकेंगे। हां उस वेद दीप को जनता के सामने रखने का कर्तव्य हमाराहोना चाहिए।

वेदवाणी के द्वारा ही हम अपनी अन्तरंग कामना को प्रकट करके विराम लेना चाहते है–

अग्ने समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे।
स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्रयच्छतु॥

अथर्व० १९·६४, १॥

सर्वश्रेष्ठ, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, तेजस्वी देवाधिदेव को मैं अपनी सदाचार की भेंट चढाता हूँ। सर्वव्यापक एवं सर्वविद्याभिज्ञ जगत्पिता मुझे श्रद्धा और मेधा प्रदान करने की कृपा करे।

———

(अब शिव दर्शन नहीं देंगे उठ चलना ही ठीक है)

चल दिया छोड़कर के शिवाला जभी, घर गया मां से भोजन लिया
मांग कर ।
हो सवेरा गया मूल घर सो रहा, शिव का मन्दिर तजा आ गया
भाग कर ।।

(पिता जी ने मूल को सोता देखा तो क्रोध में होकर बोले)

व्रत को भंग तूने किया मूल क्यों, रुष्ट शङ्कर कहीं हम पर हो जायेंगे ।
सारे परिवार को नष्ट कर देंगे, अन्न जल को भी हमको तरसायेंगे ।।

(पिताजी की बात सुनकर मूलशङ्कर ने जवाब दिया)

न पिता जी करो कोई भोला का डर, मैंने आंखों से देखा न चूहे भगे ।
किया पल में सफाया चढ़ावा सभी, और पुकारा मैंने नहीं शङ्कर जगे ।।
देखकर दृश सारा चला छोड़कर,नाम शिव शिव रटा और जगाया मैंने।
कोई भोला न बोला प्रतीक्षा करी, घर आके फिर खाना भी खाया मैंने।

(मूलशङ्कर की बात सुनकर पिता जी कहने लगे)

सच्चा शङ्कर तो रहता है कैलाश में, यह बनी है प्रतिमा जो
पाषाण की ।
सच्चे शङ्कर का दर्शन वही कर सके, योगी बन करके बाजी
लगाये प्राण की ।।

(वार्ता)

मूलशङ्कर को पिता जी की बात सुनकर ज्ञान हो गया और सोचा कि योगी बनूँगा और शंकर का दर्शन पाऊँगा । यह शिवरात्रि का व्रत संसार के लिये कितना उपकारी रहा । एक सच्चे बालक ने सच्चे मार्ग पर चलकर संसार को सत्य का मार्ग दिखलाया और योगी बनकर ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया । तथा ईश्वर का भक्त बनकर निर्भय पाषाण पूजा का विरोध किया । आओ बोध शिवरात्रि से हम कुछ सीखें । तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती के पग चिन्हों पर चलकर सत्य पथ के पुजारी बने । जैसे रात्रि को रास्ता भूला हुआ राहगीर घोर

शिव दर्शन

लेखक—श्री त्रिलोकचन्द राघव आर्य प्रचारक ट्रस्ट टङ्कारा

(कुण्डलिया)

बसता है गुजरात में, वह टङ्कारा ग्राम।
फागुन में मेला लगे, जाते आर्य तमाम॥
जाते आर्य तमाम नगर वह अति सुन्दर है।
उसी नगर के बीच मूलशङ्कर का घर है॥
कहै 'राघव आर्य' नदी के पास शिवाला।
उदय हुआ जहाँ सूर्य देश में किया उजाला॥

(टङ्कारा ग्राम में डेमी नदी के तट पर शिव मन्दिर में बैठा मूलशङ्कर शङ्कर के दर्शन के लिये बैठा है। तथा इन्तजार कर रहा है।)

(कुछ इन्तजार करने पर)

दे दर्श मुझे रहा टेर तुझे क्यों नही दया लाते भगवन।
सामान सभी स्वादिष्ट बने, क्यों नहीं आकर खाते भगवन॥
जो भी यहां आये सोने लगे, मैं सिर्फ अकेला जाग रहा।
सारे दिन मैंने व्रत रखा, दिल तेरे नाम से लाग रहा॥

(वार्ता)

(मूलशङ्कर शिव प्रतिमा पर ध्यान लगाये बैठा है कुछ देर बाद चूहे निकले और लगे सामान खाने तो मूलशङ्कर कहने लगा—)

यह लो चूहों ने खाना शुरु कर दिया,अब तो आना पड़ेगा जरुरी तुम्हें।
यह उछल कूद करने लगे देह पर, अब हटाना पड़ेगा जरुरी तुम्हें॥
जो करी देर तो यहाँ क्या पाओगे, खत्म भोजन हुआ तो पछताओगे।
दया दृष्टि करो मैं पड़ा द्वार पर, दर्श आकर मुझे कब दिखलाओगे॥
रात थोड़ी बची यह मुझे अब जची अब यहां कोई आता नजर ही नहीं।
भोला होता अगर यह इधर व उधर,चूहे भागे फिरे कोई डर ही नहीं॥

बोधरात्रि यह आई है

लेखिका—कुमारी सुशीला आर्या, प्रवक्ता गांधी कालेज,हरियाणा

जिसने स्वयं पिया विष अमृतधारा हमें पिलाई है।
उसी ऋषि की याद दिलाने बोध-रात्रि यह आई है॥

जिसके पथ पर हंसराज ने हंस हंस प्राण चढ़ाए थे।
श्रद्धानन्द ने श्रद्धा से श्रद्धा-प्रसून सजाए थे॥
'आर्य मुसाफिर' ने जिसकी घर घर अलख जगाई है।
उसी ऋषि की याद.....

गुरुदत्त जिसकी मृत्यु से नव जीवन पा हरषाए।
भक्तसिंह, सुखदेव, राजगुरु, सुमेरसिंह बलि हो पाये॥
जिसकी लेकर लाज 'लाज' ने देश की लाज बचाई है।
उसी ऋषि की याद.....॥

दलित दासता में दीनों को दिव्य आत्म विश्वास दिया,
तम में भूले भटकों को जिसने 'सत्यार्थ प्रकाश' दिया,
जिसके इङ्गित पर ले वैदिक भानु उषा मुस्काई है।
उसी ऋषि की याद.....॥

पाखण्डों की घोर घटा में जो बिजली बन कर चमका,
कु-कृत्यों की कलुष कालिमा पर जो घन बन कर बरसा,
युग युग का धो पाप पंक की जिसने सही सफाई है।
उसी ऋषि की याद.....॥

पीड़ित मानवता के आंसू पोंछे, जिसने त्राण दिया,
मौतिकता से मीत विश्व को पावन वैदिक ज्ञान दिया,
इति भीति से शून्य स्वस्ति ऋजु पंथ दिया दिखलाई है।
उसी ऋषि की याद.....॥

जंगल में भटक रहा हो। अन्धेरी छाई हो। उस समय बिजली की चमक होने पर रास्ता नजर आता है। हम चाहें कि बिजली हर समय बनी रहे ऐसा नहीं हो सकता है। वह रास्ता दिखाकर चली गई। ऐसे ही गुरुदेव दयानन्द ने हमें सच्चा रास्ता बताया और सोई हुई जाति को जगाया।

स्वामी दयानन्द

लेखक—श्री पण्डित विद्याशङ्कर जी शास्त्री

मानवी गुण के प्रबल आगार स्वामी दयानन्द।
सत्यता के सरलतम अवतार स्वामी दयानन्द।
इस तरह का उच्च मानव भूमि पर आया न था।
कर रहे मनुजत्व एकाकार स्वामी दयानन्द ॥१॥
विगत श्रद्धा रूढियों के नाम पर जो है पतन।
इस पतन से मुक्ति के उपचार स्वामी दयानन्द ॥२॥
धर्म ईश्वर नाम पर जो चल रही शैतानियां।
इन सभी के भार को हथियार स्वामी दयानन्द ॥३॥
पुरुष-नारी भेद का वैषम्य जो है चल रहा।
खोलते उस ग्रंथी का ही द्वार स्वामी दयानन्द ॥४॥
स्वर्ग का साधन है वैदिक धर्म इस संसार में।
कथन सा करते सदा व्यवहार स्वामी दयानन्द ॥५॥

मिथ्यावादी न देते थे, पढ़ने का अधिकार हमें,
पैर की जूती कह ठुकराता यह निष्ठुर संसार हमें,
जिसने मातृ-शक्ति की मिटती मर्यादा पुनः बचाई है।
उसी ऋषि की याद..... ॥

मिथ्या सम्प्रदायवाद के गढ़ को भू पर सुला दिया,
दलबन्दी के दल दल को दल भू को समतल बना दिया,
काले कुलियों को फिर से आर्यों की गरिमा दिलाई है।
उसी ऋषि की याद..... ॥

नई चेतना फूँक राष्ट्र में मंत्र दिया स्वराज नया,
जिसकी दिव्य दया से लोकतन्त्र गणराज समाज नया,
भारत की पावन संस्कृति की महिमा हर मन भाई है।
उसी ऋषि की याद..... ॥

बोध कराती बोध रात्रि यह निज कर्त्तव्य विचारें हम,
जीवन में, रण में, विचार बुद्धि में कहीं न हारे हम,
रहे अमरता-पुत्र अमर हम ऐसी सुधा दिलाई है।
उसी ऋषि की याद दिलाने बोध रात्रि यह आई है ॥

स्नेह बिखेर

लेखक : गेंदालाल पंड्या 'रुद्रेश' एम. ए. बी. एड.

रे मानव ! तू जन-जन में सम, स्नेह बिखेर !
क्षण-भंगुर जीवन है, किञ्चित, मत कर देर !
धन-वैभव पर कितनी ममता, कितना मोह ?
यह मिट्टी है, इस मिट्टी से, कर विद्रोह ?
हृद्-वीणा के तारों से कर, मधु झंकार !
पूर्ण शून्य में दिव्य 'दया' का, सत विस्तार !
निश्छल मन से, 'दयानन्द' को, पल-पल टेर !
रे मानव ! तू जन-जन में सम, स्नेह बिखेर !

भावना-यज्ञ

लेखक—डा० मंगलदेव शास्त्री, विद्यामार्तण्ड देहली

भावना कुसुमैरीडे तत्तेज' शाश्वतं महत् ।
आत्मा सवितृरूपेण जगतस्तस्थुषश्च यत् ॥

मैं भावना रूपी पुष्पों से उस महान् शाश्वत प्रकाश की पूजा करता हूं जो सविता (आदित्य अथवा सर्व प्रेरक शक्ति) के रूप में समस्त जड़ और चेतन जगत् की आत्मा है ।

व्याख्या—उपर्युक्त पद्य के तीन अंश हैं । प्रथम, भावना-रूपी पुष्पों से भगवान् की पूजा, द्वितीय, उपास्यदेव के स्वरूप का चिन्तन, तृतीय, उपास्य देव की महिमा ।

शास्त्रों में भगवान् की पूजा के अनेक प्रकार लिखे हैं । मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ उसकी पूजा के प्रकार में भी विकास होता है । सब से निचली श्रेणी की पूजा वह है जिससे मनुष्य अपने धनादि के आधार पर, रुपये-पैसे के सहारे, या ऐसे बाह्य पदार्थों द्वारा जो रुपये पैसे से खरीदे जा सकते हैं, भगवान् को प्रसन्न करना चाहता है । बड़े-बड़े यज्ञ, जिनको केवल धनवान् लोग ही कर सकते हैं, इसी प्रकार की पूजा के अंग हैं । गीता में इन्हीं यज्ञों को 'द्रव्य-यज्ञ' कहा है ।

इसी तरह सबसे ऊँची श्रेणी की पूजा वह है जिसमें बाह्य आडम्बर का सहारा छोड़कर अपनी शुद्ध भावना को ही मानों पुष्पों के सदृश मानकर सर्व-भाव से भगवान् का चिन्तन, पूजन और भजन किया जाता है । भगवद्गीता में जिस सात्विक भगवद्-भक्ति का वर्णन है उसका ही दूसरा नाम 'भावना-यज्ञ' है । जब तक मनुष्य भावना-यज्ञ का अनुगामी नहीं बन जाता है वह मानो ईश्वर से बहुत दूर ही रहता है ।

भावना-यज्ञ

लेखक—डा० मंगलदेव शास्त्री, विद्यामार्तण्ड देहली

भावना कुसुमैरीडे तत्तेज' शाश्वतं महत् ।
आत्मा सवितृरूपेण जगतस्तस्थुषश्च यत् ॥

मैं भावना रूपी पुष्पों से उस महान् शाश्वत प्रकाश की पूजा करता हूं जो सविता (आदित्य अथवा सर्व प्रेरक शक्ति) के रूप में समस्त जड़ और चेतन जगत् की आत्मा है ।

व्याख्या—उपर्युक्त पद्य के तीन अंश हैं । प्रथम, भावना-रूपी पुष्पों से भगवान् की पूजा, द्वितीय, उपास्यदेव के स्वरूप का चिन्तन, तृतीय, उपास्य देव की महिमा ।

शास्त्रों में भगवान् की पूजा के अनेक प्रकार लिखे हैं । मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति के साथ-साथ उसकी पूजा के प्रकार में भी विकास होता है । सब से निचली श्रेणी की पूजा वह है जिससे मनुष्य अपने धनादि के आधार पर, रुपये-पैसे के सहारे, या ऐसे बाह्य पदार्थों द्वारा जो रुपये पैसे से खरीदे जा सकते हैं, भगवान् को प्रसन्न करना चाहता है । बड़े-बड़े यज्ञ, जिनको केवल धनवान् लोग ही कर सकते हैं, इसी प्रकार की पूजा के अंग हैं । गीतों में इन्हीं यज्ञों को 'द्रव्य-यज्ञ' कहा है ।

इसी तरह सबसे ऊँची श्रेणी की पूजा वह है जिसमें बाह्य आडम्बर का सहारा छोड़कर अपनी शुद्ध भावना को ही मानों पुष्पों के सदृश मानकर सर्व-भाव से भगवान् का चिन्तन, पूजन और भजन किया जाता है । भगवद्गीता में जिस सात्विक भगवद्-भक्ति का वर्णन है उसका ही दूसरा नाम 'भावना-यज्ञ' है । जब तक मनुष्य भावना-यज्ञ का अनुगामी नहीं बन जाता है वह मानो ईश्वर से बहुत दूर ही रहता है ।

व्रत-ग्रहणम्

लेखक : सत्यप्रिय आचार्य

ओ३म् बोधा मे अस्य वचसो यविष्ठ म हिष्ठस्य प्रभृतस्यस्वध्यावः।
पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति वन्दारुष्टे तन्वं वन्दे अग्ने॥

यजु० १२-मा ४२॥

अर्थ--हे यविष्ठ जिज्ञासु बोध=जानो-समझो ज्ञान प्राप्त करो किससे (महिष्ठस्य)—उत्तम श्रेष्ठ विद्वानों ने महा विद्वान ही ज्ञान दान में समर्थ होते हैं पुनः ज्ञान होने पर पीयति=कोई अज्ञानी यदि निन्दा करे—अथवा आपकी स्तुति करे तो आप समानभाव से शान्त रहते हुये धर्मानुकूल आचरण करते रहें। किसी की लल्लों पत्तों में आकर पथ भ्रष्ट होना बुद्धिमत्ता नहीं। मनुष्य का परम कर्त्तव्य है कि सत्य ज्ञान होने पर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहिये कभी भी सत्य को न छोड़े और असत्य स्वीकार न करे—यह मनुष्य का महान् उत्तम और सर्वश्रेष्ठ गुण हैं—"सत्यमेव जयते" वेदादि शास्त्रों में पूर्णतया सत्य सनातन सार्वभौम सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है।

वेद का आदेश है। यजु० १९।मन्त्र ७७

अश्रद्धामन्हतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः॥

अर्थात अतृप्त—असत्य से घृणा और उसका त्याग तथा सत्य में श्रद्धा भक्ति और प्रीति करनी चाहिये।

सत्य को धारण करने से मनुष्य मानव समाज में प्रतिष्ठित होकर विश्वासपात्र बन जाता है—सत्याऽसत्य की परीक्षा के उपाय महर्षि दयानन्दजी ने लिखे हैं।

१—ईश्वर के गुण कर्म-स्वभाव और वेद विद्या अर्थात् ईश्वर के सत्य न्याय-दयालुता परोपकार आदि गुणों से तथा वेदानुकूल जो हो वही सत्य होगा।

२—सृष्टि क्रम—अर्थात्-आंख से देखना कान से सुनना माता माता पिता से सन्तान आदि सृष्टि के अनुकूल होने से इससे विरुद्ध मिथ्या को कभी न मानना चाहिये।

३—प्रत्यक्षादि आठ प्रमाणों के अनुकूल हो वह सत्य होगा।

४—आप्तों का आचार—उपदेश तथा उनके ग्रन्थों में सत्य ही है। अतः यह प्रामाणिक है—

५—अपने आत्मा की साक्षी—अनुकूलता और पवित्रता सदा आत्मवत् सर्वभूतेषु का आदर्श व्यवहार में आये तो सहज ही सत्य का ज्ञान हो जायेगा इन पांच कसौटियों से परीक्षा करके सत्य के ग्रहण और असत्य के छोड़ने का दृढ़ संकल्प करना चाहिये।

महर्षि दयानन्दजी के जीवन से प्रेरणा और शिक्षा प्राप्त करके हम व्रती बने—फिर तो सर्वत्र निश्चय ही सफलता ही सफलता है। व्रतेन दीक्षामाप्नोति यजु० २१ मं० ३० व्रतों के धारण करने से उत्तमाधिकार प्राप्त होता है अतः जीवन सफल बनाने के लिये—

व्रतं कृणुत। यजु० अ० ४। मन्त्र ११

शिवरात्रि के पावन पर्व पर जो भी सत्याचरण ब्रह्मचर्यादि व्रतों को धारण करेंगे उनका निश्चित कल्याण होगा। मंगलमय भगवान से प्रार्थना है:—भद्रम्भद्रं क्रतुमस्मासुधेहि।

हर एक गुप्त रोग के लिए आज ही मिलें या लिखें:—
वैद्य मोहनलाल सुपुत्र हकीम वीरमल आर्य-प्रेमी,
आर्यन फार्मेसी आर्यप्रेमी भवन, पोस्ट बाक्स
नं० २७, नला बाजार, अजमेर।

शिवरात्रि

भारत में शिवरात्रि के पर्व का बहुत महत्व है। शिवरात्रि का अर्थ है—कल्याणकारिणी रात्रि, और शिव (महादेव) से सम्बद्ध रात्रि। वर्तमान में हिन्दू समाज इस रात्रि में विशेष रूप से शिव मूर्ति की अर्चना करता है। परन्तु जब तक शिव (महादेव) के साथ इस रात्रि का क्या सम्बन्ध है, यह प्रकट न हो, तब तक यह पर्व मनाना सफल नहीं हो सकता। यदि इस पर्व का सम्बन्ध केवल कल्याण की भावना के साथ हो तो केवल शिव-मूर्ति की अर्चना एकदेशी रहती है। प्रत्येक सम्प्रदाय वाला अपने अपने इष्ट देव की अर्चना—पूजा कर सकता है। परन्तु ऐसा देखा नहीं जाता, अतः यह मानना पड़ता है कि इस रात्रि का शिव की किसी महत्वपूर्ण घटना से सम्बन्ध है।

महाभारत में अनेक स्थानों पर शिव के महत्वपूर्ण कार्यों का वर्णन है। 'शिव सहस्त्रनाम स्तोत्र' तो एक एक नाम से महात्मा शिव के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का संकेत करते हैं। जहां तक मेरा स्वाध्याय है, मैं कह सकता हूं कि महात्मा शिव सपत्नीक होते हुए भी पूर्ण ब्रह्मचारी थे। उनका पार्वती के साथ शारीरिक सम्बन्ध हुआ ही नहीं। इसको संकेतित करने वाले शिव सहस्रनाम में अनेक नाम हैं। उदाहरण के लिये दो नाम उपस्थित करता हूं—

उत्तानशयः—इसका अर्थ है सदा सीधा सोने वाला। स्त्री संसर्ग में पुरुष अधोमुख होता है। अतः यह नाम बताता है कि शिव ने पार्वती के साथ यौन सम्बन्ध नहीं किया था।

स्थाणु—स्थाणु का अर्थ होता है पत्र पुष्प फल से रहित ठूंठ (वृक्ष) यह नाम बताता है कि इसी आजन्म ब्रह्मचर्य के कारण शिव सन्तान रूपी फल से रहित थे। कार्तिकेय शिव के औरस पुत्र नहीं थे, जसा कि समझा जाता है। वे उनके पालित पुत्र थे, जैसे गणेश।

इसकी ओर महाभारतस्थ कार्तिकेयोत्पत्ति का प्रकरण भी संकेत करता है।

इसी आजन्म ब्रह्मचर्य और वह भी पत्नी के होते हुए पालन करना अति असम्भव सा कार्य है, परन्तु शिव ने उसे भी सम्भव कर दिखाया। इसी लिये उन्हें कामारि या मदनारि कहते हैं। शिव का एक महत्व-पूर्ण नाम है—अर्धनारीश्वर। इसका भाव यह है कि नारी पार्वती को उपस्थिति वे बाहर न मानकर अपने अर्धभाग में ही स्वीकार करते थे। जो मनुष्य अपने भीतर ही अर्धभाग में नारी की स्थिति जान लेता है वह बाह्य नारी-सम्बन्ध से दूर हो जाता है। शतपथ में कहा है—

तावत् पुरुषो अर्धो भवति यावज्जायां न विन्दते। अथ जायां विन्दते पूर्णो भवति।

इसका भाव यह है कि मनुष्य अपने में किसी वस्तु की न्यूनता समझता है और उसे पूर्ण करने के लिये जाया को प्राप्त करता है। तब वह अपने को पूर्ण समझने लगता है।

यदि किसी को यह ज्ञान हो जावे कि जिस नारी रूपी बाह्य वस्तु की मैं कामना करता हूं, वह तो मेरे भीतर ही अर्धभाग मे स्थित है, तब वह अपने आपको पूर्ण जान कर जाया की कामना नहीं करता। यह ज्ञान परम सूक्ष्म है। इसी महत्वपूर्ण ज्ञान को प्राप्त करके शिव अपने में पूर्ण हो गये, और अन्य देवों की अपेक्षा महान् हो गये, महा-देव बन गये। यही उनके तृतीय नेत्र के उद्घाटन का भाव है। इसी से उन्होंने मदन को भस्मीभूत किया था।

सम्भव है इसी ज्ञान की उपलब्धि उन्हें इस रात्रि में हुई होगी, और उन्होंने काम पर विजय पाकर अर्धनारीश्वरत्व को समझा होगा।

आज के दिन यदि शिवभक्त महात्मा शिव के इस तत्वज्ञान को समझने के लिये कुछ प्रयत्न करें, तो यह रात्रि भी उनके लिये शिव (कल्याण) रात्रि बन सकती है।

दयानन्द-बोध

इसी शिवरात्रि के साथ महान् तत्ववेत्ता ऋषि दयानन्द का संबंध जुड़ा हुआ है। बालक मूलशंकर को इस रात्रि में ही कुल-परम्परा से प्राप्त शिवमूर्ति की पूजा करते हुए इस तत्व का बोध हुआ था कि—इतिहास पुराणों में जिस महाबली त्रिपुरारि शिव का वर्णन मिलता है, वह यह प्रस्तर मूर्ति नहीं है। महादेव ने तो बड़े बड़े बलवान् राक्षसों को मारा था, और यह महादेव जिसकी पूजा मैं कर रहा हूं, वह तो अपने ऊपर से चढ़ाये हुए नैवेद्य को खाने वाले चूहों को भी हटाने में असमर्थ है। इसलिये मैं उस सच्चे शिव महादेव की खोज करूंगा, जिसका वर्णन शास्त्रों में मिलता है। इस प्रकार मूलशंकर के लिए यह रात्रि वास्तव में शिव-कल्याण की रात्रि बन गई।

मूलशंकर ने इस रात जो शिव-संकल्प लिया उसके लिए उन्होंने वैभवपूर्ण घर का त्याग करके सच्चे शिव की खोज में अपना सारा जीवन अर्पित कर दिया। सच्चे शिव के दर्शन के लिये योग की आवश्यकता का अनुभव होने पर योगियों की खोज में अर्बली (आबू) पर्वत हिमालय के हिमाच्छादित शिखरों एवम् विन्ध्याचल के दुर्गम पर्वत और श्रेणियों जगलों की रोमांचकारी यात्राएं की। 'जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ' की उक्ति के अनुसार उन्हें कुछ योगीजनों के दर्शन हुए। उनसे योग विद्या सीखी और समाधिपर्यन्त उत्कृष्ट योग में सफलता प्राप्त की।

परन्तु अभी उन्हें विद्या के क्षेत्र में न्यूनता अखरती थी। यद्यपि उन्होंने अपने दीर्घकालीन भ्रमण में जहाँ भी कोई विद्वान् मिला, उससे शिक्षा-ग्रहण करने का पूरा यत्न किया, तथापि उन्हें ऐसा कोई गुरु नहीं मिला, जो शास्त्र ज्ञान प्राप्त कर लेने पर भी हृदय में जो अविद्या की गांठ रह जाती है, उसे खोलकर शास्त्रों का तत्वज्ञान कराये। अन्त में उन्हें इसमें भी सफलता मिली, और मथुरा निवासी प्रज्ञाचक्षु गुरुवर दण्डी विरजानन्द ऐसे सद्गुरु प्राप्त हुए।

यद्यपि गुरुवर विरजानन्द के चरणों में बैठकर लगभग तीन वर्ष ही विद्याध्ययन किया और वह भी व्याकरण शास्त्र का ही। तथापि गुरुवर विरजानन्द ने व्याकरण शास्त्र के अध्यापन के व्याज से उन्हें उस मूल तत्व ज्ञान से भी सम्पन्न कर दिया जिसके सहारे से दयानन्द शास्त्रों के तत्वज्ञान की उपलब्धि में समर्थ हुए। वह तत्व ज्ञान है आर्ष ग्रन्थों को पढ़ो पढ़ाओ, अनार्ष ग्रन्थों का परित्याग करो।

इतना ही नहीं, गुरुवर विरजानन्द ने दयानन्द को एक महती शिक्षा यह दी कि अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट मत होवो। अज्ञानान्धकार में भटकती भारतीय जनता को सुमार्ग दर्शाकार उसके दुःखों को दूर करो। देशवासियों की उन्नति में अपनी उन्नति समझो।

इस गुरुमन्त्र को पाकर दयानन्द ने अपनी व्यक्तिगत उन्नति के प्रयत्नों का त्याग करके दया से परिपूर्ण होकर भारतीय जनता के अज्ञानान्धकार जिसके कारण भारतवासी दुःखी, हीन दरिद्र और पराधीन थे, को दूर करके उन्हें सुमार्ग दर्शाया। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उन्होंने सर्वस्व समर्पित कर दिया।

इस दृष्टि से शिवरात्रि में शिवार्चन करते हुए बालक मूलशंकर को जो बोध हुआ उसी की यह महिमा है कि मूलशकर स्वयं सच्चे शिव को पाने में जहां समर्थ हुए, वहां उन्होंने भारतीय जनता में व्याप्त अज्ञान, मतमतान्तर के विरोध, एवं पराधीनता से व्याप्त दुःख दारिद्रय को दूर करने का सच्चा मार्ग बताकर सभी भारतवासियों को शिव-कल्याण के मार्ग पर चलने में समर्थ बनाया।

आज इस शुभ पर्व के अवसर पर प्रत्येक भारतीय विशेष कर दयानन्द के अनुयायियों को शिव-कल्याण के मार्ग पर चलने का शिव-संकल्प ग्रहण करना चाहिए। इस शिवसंकल्प से जहां हमारी व्यक्ति-गत उन्नति होगी वहां देश और संसार के भी कष्ट दूर होंगे।

गुरुवर विरजानन्द ने अपने शिष्य को जिस शास्त्रीय तत्व ज्ञान का बोध कराया, और दयानन्द ने अपने जीवन में जिसका प्रचार किया, उसे हम प्रायः भुलाते जा रहे हैं । हमारे अध्ययन अध्यापन में से उत्तरोत्तर आर्ष ग्रन्थों का लोप होता जा रहा है । उसके स्थान पर हम निरन्तर अनार्ष ग्रन्थों,मनुष्य-प्रणीत ग्रन्थों के जाल में फंसते जा रहे हैं । इसी प्रकार प्रारम्भिक आर्य व्यक्तियों में चाहे वे साधारण कोटि के ही क्यों न थे, आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय की जो लहर चली थी, और जिसके कारण वेद ब्राह्मण उपनिषद् दर्शन वेदांग इतिहास आदि आर्ष ग्रन्थों की अनेकानेक व्याख्यायें प्रकाशित हुई थीं, वह लहर समाप्त हो गई है । इस क्षेत्र में आर्ष ग्रन्थों की नई व्याख्याओं के प्रकाशन का कार्य तो प्रायः अवरुद्ध हो ही गया है, प्राचीन व्याख्यायें भी अप्राप्य हो गई हैं ।

आज हमारा स्वाध्याय दैनिक साप्ताहिक वा मासिक पत्र-पत्रिकाओं तक ही सीमित रह गया है । आर्यसमाज में कोई भी शास्त्रीय गम्भीर पत्रिका प्रकाशित नहीं होती । स्वाध्याय के अभाव के कारण यदि किसी लेख में कुछ अंश भी शास्त्रीय विवेचना से सम्बद्ध आ जावे, तो जनता उसे समझने में असमर्थ हो जाती है । हमारे साप्ताहिक अधिवेशनों में भी व्याख्यान पहले के समान शास्त्रीय तत्वों की विवेचनापरक नहीं होते । सब क्षेत्रों मे मांग होती है सरलता की । चाहे कोई व्याख्याकार किसी शास्त्रीय तत्व को कितना ही सरल करके क्यों न समझावे, परन्तु उसके स्वभावतःगम्भीर होने के कारण वह समझ में नहीं आता ।

यह पर्व वस्तुतः आत्म-निरीक्षण का है । अपनी कमियों को पूरा करने के लिए किसी शिवसकल्प को धारण करने का है । यदि आर्य जनता इस शुभ अवसर पर 'आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय का शुभ सकल्प लेवे' और स्वाध्याय में प्रयत्नशील होवे तो उनके लिये यह पर्व वस्तुतः शिवस्वरूप हो सकता है ।

—युधिष्ठिर मीमांसक

लम्बे जलूसों से और गगन भेदी नारों से आर्यसमाज कब तक जीता रहेगा

लेखक : पण्डित आनन्दप्रिय प्रधान : गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा बड़ौदा

इस समय आर्यसमाज अपनी शिक्षण संस्थाओं के ऊपर वार्षिक तीन करोड़ रुपये से अधिक रकम खर्च कर रहा है। महात्मा आनन्द-स्वामीजी ने एक प्रवचन में कहा था कि डी० ए० वी० कॉलेज कमेटी ही पौने करोड़ रुपये अपनी संस्थाओं पर खर्च करती है भला इससे किस आर्य का हृदय आनन्द से विभोर न हो।

अनेक गुरुकुल कॉलेज, हाईस्कूल, विधवाश्रम, अनाथालय चलाने पर भी आज आर्यसमाज को आय संस्थाओं को एक बड़ी भारी कमी का अनुभव हो रहा है वह है आर्यसमाज के पास इस समय निष्ठावान कार्यकर्ताओं का अभाव है।

हमारी संस्थायें निष्ठावान कार्यकर्ता उत्पन्न नहीं कर रही। एक कार्यकर्त्ता चला जाता है उसके रिक्त स्थान की पूर्ति नही होती और एक समय अति प्रतिभाशाली संस्थायें श्रद्धा रहित कार्यकर्ताओं के हाथ में पड़ जाती है और अपना गौरव खो देती है। आर्यसमाज का भी यही हाल है। हमारा प्रचारतन्त्र खोखला हो गया है जिनको हम प्रकाश स्तम्भ के रूप में रखते हैं वे ही टिम टिमाते दिये की तरह थोड़ा प्रकाश देकर बुझ जाते हैं।

आर्यसमाज ने प्रचार तथा संस्थाओं के लिये त्यागी तपस्वी कार्यकर्ता उत्पन्न करने का आयोजन गम्भीरतापूर्वक किया ही नहीं इसी कारण आर्यसमाज व्यवस्थित योजना के अभाव में दिन प्रतिदिन शिथिल होता जा रहा है। हमारी स्थिति "अपूज्य यत्र पूज्यते" जैसी हो रही है। आज जिस संगठित व्यवस्था से गुजरात में जैन स्वामी

नारायण सम्प्रदाय के लोग काम करते हैं, वे दिन प्रतिदिन सफल हो रहे हैं ।

हमने अफ्रिका दो बार भ्रमण किया । प्रथम १९३४ में द्वितीय १९४९ में । प्रथम प्रवास में हमने देखा कि पूर्व अफ्रिका में आर्यसमाज की प्रतिष्ठा और प्रभाव सर्व साधारण पर अत्यधिक था । दूसरे प्रवास में देखा कि आर्यसमाज के मन्दिर और शिक्षण संस्थाओं के भवन तो बड़े विशाल एवं गौरव उपजावे ऐसे थे परन्तु जनता पर स्वामी नारायण का प्रभाव था आर्यसमाज का स्थान गौण हो गया ।

गुजरात में गोंडल में स्वामी नारायण सम्प्रदाय के लोग एरोप्लेन में आये और लाखों रुपये दे गये । इनके विशाल कॉलेज, गुरुकुल मन्दिर बड़े भव्य रूप में खडे हो रहे हैं । पर आज टंकारा में यहां के कार्य के लिये आर्यजगत उपराम है ।

यदि ये ही गतिविधि रही तो हम १९७५ में शताब्दी मनाकर दस मील लम्बा जलूस निकाले और जयकारों से आकाश गुंजायमान कर दें हमें दुःख के साथ स्वीकार करना पड़ेगा कि आर्यसमाज का सगठन धीमें धीमें शिथिल हो रहा है उसको लाभ नहीं होगा ।

आज भारत सरकार श्री अरविन्द, श्री रविन्द्रनाथ ठाकुर, श्री स्वामी विवेकानन्द के स्मारकों पर राष्ट्र के कोष में से लाखों रुपया खर्च कर रही है । क्यु न आर्यजगत एक महान आन्दोलन कर टंकारा में एक संस्कृत युनिवरसिटी महर्षि दयानन्द के नाम पर स्थापित करने के लिये केन्द्रीय सरकार को बाध्य करें ।

इस कार्य को गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने उठाया है । हमें आशा है सारे विश्व में आर्यसमाज तथा आर्यसमाजें इस विचार का आन्दोलन कर केन्द्र सरकार को यह काम करने के लिये बाध्य करें ।

अब जलूसों का, भाषणों का युग नहीं रहा सक्रिय आर्यसमाज बनाकर ही हम आर्यसमाज की रक्षा कर सकते हैं । आशा है आर्य जगत् टंकारा में महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय बनाने में योगदान दें ।

विटामिन 'सी' से भरपूर

आंवला

कल्याणकोटि

जब हम किसी ऐसे फल की बात सोचते हैं जो विटामिन सी से भरपूर हो तो सबसे पहले आंवले का ही चित्र सामने घूम जाता है। डा० वी० रामकृष्ण के शब्दों में "ताजे आंवले के रस में संतरे के रस की अपेक्षा बीस गुना अधिक विटामिन सी होता है।" आंवले को गर्म करने या सुखाने के बाद भी इसमें पर्याप्त मात्रा में विटामिन सी बचा रह जाता है।

इतना ही नहीं

केवल विटामिन सी ही नहीं आंवला दूसरे कई उपयोगी खाद्य तत्वों की दृष्टि से भी बड़ा धनी है। आधुनिक खोजों के अनुसार प्रति औंस आंवले में पाए जाने वाले तत्व इस प्रकार है :

प्रोटीन ०.१ ग्राम; फास्फोरस ६ मि० ग्राम; कैल्शियम १४ मि० ग्राम; शर्करा वर्ग (कार्बोहाइड्रेट) ४.०१ ग्राम; खनिज लवण ०.२ ग्राम, वसा ० १ ग्राम, लोहा ०.३ मि० ग्राम, विटामिन सी १७० मि० ग्राम; निकोटेनिक एसिड ०.१ मि० ग्राम तथा कैलोरी मूल्य १७।

आंवला नई खोजों से ही सामने नहीं आया है, यह तो प्राचीन काल से ही हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त उपयोगी खाद्य माना गया है। कहते हैं कि च्यवन ऋषि आंवलों से निर्मित अवलेह का सेवन कर फिर से युवक की तरह शक्तिशाली हो गए थे। तभी से उस अवलेह का उनके नाम के साथ जोड़ दिया गया। उसी 'च्यवनप्राश अवलेह' को आज भी न जाने कितने लोग प्रयोग करके लाभ उठाते हैं। प्रायः आयुर्वेद के सभी ग्रंथों में इस फल की बड़ी प्रशंसा की गई है। वस्तुतः आयुर्वेद के

अनुसार छ रसः होते हैं, जैसे खट्टा मीठा, नमकीन, कसैला, कडुवा और तिक्त। ये सभी रस हमारे स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त आवश्यक हैं और विभिन्न खाद्य पदार्थों के द्वारा हमें प्राप्त होते रहते हैं। किन्तु बहुत कम ऐसी चीजें हैं, जिनमें एक साथ ये सभी मिलते हैं। उनमें आंवला एक ऐसा फल है जिसमें नमकीन रस को छोड़कर शेष सभी रस होते हैं।

सब जगह मिलता है

आंवला प्रायः पूरे भारत में महत्वपूर्ण खाद्य के रूप में माना जाता है। विभिन्न क्षेत्रों में इसके सुप्रचलित नाम इस प्रकार है: संस्कृत—आमलक, श्रीफल, अमृतफल, तमिल—वेल्लिके, कन्नड़—नेल्लिकादि, मराठी—आंवला, बंगला—अम्लकी, गुजराती—आम्बला आदि।

यह सितम्बर के अन्त से बाजार में आना शुरू हो जाता है। जनवरी के आखिर में यह पकने लगता है और फिर मार्च तक पका हुआ मिलता रहता है। इसे कई प्रकार से प्रायः प्रतिदिन प्रयोग किया जा सकता है। आंवले की चटनी और खट्टा-मीठा अचार बहुत प्रचलित हैं। प्रायः बच्चे और बड़े आंवला धोकर और नमक के साथ यों ही काट-काटकर खाते और मजा लेते हैं। आंवले का मुरब्बा दैनिक व्यवहार की मीठी और स्वादिष्ट चाज है। आंवले का तेल सिर-दिमाग और बालों के लिए बड़ा उपयोगी बताया जाता है। जिन दिनों ताजा आंवला नहीं मिलता सूखे आंवलों को भिगोकर फिर पीसकर चटनी के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है आंवला विटामिन सी का भण्डार है। विटामिन सी की कमी से मसूढ़े कमजोर हो जाते हैं, उनमें से बड़ा खून निकलने लगता है, साधारण घाव या चोट भी देर से भरते हैं और 'स्कर्वी' रोग हो जाता है। आंवला विटामिन सी की प्राप्ति के लिए सरल तरीका है। इसे मौसम में ताजा और बेमौसम सूखा ही प्रयोग करना अत्यन्त उपयोगी है। रूपान्तर-शिगोत्रि

भारत पाक युद्ध का लेखा-जोखा

(दिसम्बर २१ तक)

	भारत	पाक
विमान	४५	९४
टैंक	७३	२४६
युद्धपोत	१	४
पनडुब्बी	—	३
तोपवारी नौकाएं	—	१६
छोटे जहाज	—	१२
स्टीमर तथा अन्य पोत	—	१००
अधिकृत क्षेत्र	१४०० वर्ग मी०	५० वर्ग मी०

अधिकृत क्षेत्र

भारत के : पाकिस्तान द्वारा

छम्ब क्षेत्र में तवी नदी के पश्चिमी किनारे तक का भाग।

हुसैनीवाला क्षेत्र में सतलज नदी के पश्चिम का भाग।

फाजिल्का के ७-८ मील पश्चिम में कुछ भाग जिसमें पक्का ग्राम तथा सदुना जल-वितरक सम्मिलित हैं।

पाकिस्तान के : भारत द्वारा

कारगिल—४० चौकियां।

गुरास, टिथवाल एव उड़ी क्षेत्र में बहुत-सी चौकियां तथा लिप्पा घाटी का बहुत-सा भाग।

पूंछ-राजौरी-नौशेरा क्षेत्र में महत्वपूर्ण ऊंचे क्षेत्र।

अखनूर का पूरा क्षेत्र।

जम्मू क्षेत्र में कुछ सीमावर्त्ती चौकियां।

शकरगढ-जफरवाल क्षेत्र का काफी बड़ा भाग।

रावी के दक्षिण में डेरा बाबा नानक क्षेत्र, डेरा बाबा नानक-अजनाल-अमृतसर, खेमकरन, फीरोजपुर, ममदोत, फाजिल्का क्षेत्र में सीमावर्ती चौकियां।

बीकानेर, रूकनपुर, रनहाल, बिजनोट तथा अन्य क्षेत्र की सीमावर्त्ती चौकियां।

जैसलमेर, इस्लामगढ़ भठखनवाला, खू तथा अन्य चौकियां (पाक सीमा में ४ से ८ मील अन्दर)।

बाड़मेर एवं कच्छ क्षेत्र, नया छोड तक का सारा भाग नगरपारकर वल्ज का पूस भाग, उमरकोट, चाचरी तथा वीरवाद के पूर्व का भाग।

बाड़मेर सिन्ध, कच्छ सिन्ध क्षेत्र का बहुत बड़ा भाग जिसमें छाड़वेट भी सम्मिलित है।

	पूर्व	पश्चिम	योग
मृत	१०४७	१४२६	२४७०
घायल	३०४७	३६११	६६५८
लापता	८९	२१४९	२२३८
	४१८३	७१८६	११३६९

बंगला देश में पाक युद्धबन्दी १,००,०००

आवश्यक सूचना

अ प "आर्य प्रेमी" के ग्राहक है ? यदि नहीं तो आज ही केवल तीन रुपये मात्र वार्षिक चन्दा भेजें। यदि ग्राहक हैं और चन्दा समाप्त हो गया है तो भी तुरन्त चन्दा भेजने की कृपा करें।

नोट:—पांच ग्राहक बनाकर उनका १५) रु० चन्दा भेजने वाले मित्र को एक वर्ष तक 'आर्यप्रेमी' पत्रिका निशुल्क भेज दी जाएगी।

—सम्पादक आर्य प्रेमी

ऐ बोध-दात्री शिवरात्रि

(लेखक—श्री डा० सूर्यदेव शर्मा, एम. ए. डी. लिट्, अजमेर)

(१)

प्रतिभा-सम्पन्न पुरुष जग में, सदियों में बिरले होते हैं।
जो अपनी बुद्धि प्रखरता से नित, बीज प्रगति के बोते हैं।
वे नित नव आविष्कार करें, जग को लाभान्वित करते हैं।
अपनी प्रतिभा के प्रकाश से, सब को प्रतिभासित करते हैं।

(२)

सब दीन हीन दुखिया जन को, सड़कों पर मरते लखते हैं।
पर गौतम बुद्ध बने कितने, प्रतिभा को कौन परखते हैं।
वृक्षों से सेब आम गिरते, हम निस दिन नित्य निहारे हैं।
पर कौन गुरुत्वाकर्षण का, बिन न्यूटन नियम निकारे हैं?

(३)

था विवाह का अवसर भी क्या, वैराग्य वृत्ति का प्रावधान?
बस "सावधान" एक शब्द, कर गया 'रामदास' को गुरु महान्॥
पाषाण मूर्ति पर डण्ड पेलते, सबने चूहा देखा है।
पर कितने बने मूलशंकर, कितना ऋषित्व का लेखा है?

(४)

वे दिव्य दृष्टि रखने वाले, प्रतिभा के धनी मनुज कितने।
युग चक्र बदल देने वाले, उत्पन्न किये कितने ऋता ने?
इस युग में एक दयानन्द था, जो दम्भ दुर्ग को हिला गया।
वैदिक बम्बार्डमेंट से गुरुडम-गढ़ मिट्टी में मिला गया।

(५)

ऐ बोध-दात्री शिवरात्रि, तू बार-बार तो आती है।
पर किसी मूलशंकर को क्यों, ऋषि बोध न देकर जाती है?
प्रतिभा सम्पन्न महा मानव, क्यों अब उत्पन्न न होते हैं?
क्यों बुद्ध, दयानन्द, रामदास, न्यूटन बन सच न संजोते हैं?

शिवरात्रि या बोधरात्रि

लेखक—धर्मदेव आचार्य करतारपुर

संसार में एक नियम देखने में आता है कि "दिनमपि रजनी सायं प्रात. शिशिर वसन्तौ पुनरायात:" दिन के बाद रात्रि और रात्रि के बाद दिन तथा शिशिर वसन्त का मौसम भी बार २ आता ही रहता है इसी प्रकार त्यौहार भी प्रतिवर्ष आते ही रहते हैं इसी प्रकार का विशेष पर्व शिवरात्रि भी है जो प्रतिवर्ष आता है और हमें शिक्षा देकर चला जाता है कुछ मानव जीवन में उससे शिक्षा को ग्रहण कर लेते हैं और कुछ लकीर के फकीर बने हुए रस्ममात्र कर लेते हैं जिससे जीवन में कुछ परिवर्तन तो होता ही नहीं। महापुरुषों के जीवन में कई घटनायें ऐसी होती हैं जो देखने में तो बहुत छोटी होती हैं किन्तु जीवन के पथ को मोड़ देती हैं। यद्यपि शिवरात्रि भारतवर्ष में शिवादि के आराधना द्वारा विशेष रूप से मनायी जाती है वर्तमान में हिंदू समाज इस रात्रि में विशेष रूप से शिवमूर्ति की अर्चना करता है तथापि इस रात्रि का सम्बन्ध तत्ववेत्ता ऋषि दयानन्द से विशेष रूप से जुड़ा हुआ है। इस घटना का वर्णन ऋषि दयानन्द अपनी स्वकथित जीवनी में इस प्रकार करते हैं—

"मेरे यहां नगर के बाहर एक बड़ा शिवालय है वहां शिवरात्रि के कारण बहुत लोग रात्रि के समय जाते आते रहते हैं और पूजा करते हैं, वहां मैं भी अपने पिता के साथ गया प्रथम प्रहर की पूजा करके पुजारी लोग बाहर निकल कर सो गये। दूसरे प्रहर की पूजा पूरी हो गयी थी। १२ बजे के अनन्तर लोग जहां तहां मारे ऊँघ से झूलने लगे और शनैः शनैः सब लेट गये। मैंने सुन रखा था कि सोने से शिवरात्रि का फल नहीं होता इसलिये अपनी आंखों पर जलकी छींटे मारकर जागता रहा। पिता आदि सब सो गये। इतने में ऐसा चमत्कार हुआ कि मन्दिर के बिल से एक ऊंन्दर बाहर निकलकर पिण्डी के चारों ओर फिरने लगा और अक्षतादि ऊपर चढ़कर खाने लगा। मैं तो जागता ही था मैंने सब

को भूलकर एक पत्थर का लिंग पूजन करते हैं तू उठ विद्याध्ययन कर वेदों को जो ईश्वरीय ज्ञान है पढ़कर लोगों को सत्य उपदेश कर कि सच्चा शिव कल्याणकारी परमात्मा है जिसकी कोई मूर्ति नहीं ए लोगों तुम अन्धेरे से निकलो ज्ञान और योग द्वारा अपने कल्याण का साधन करो इस घटना पर सर सैय्यद अहमद खां सी. एस. आई. इस प्रकार लिखा था कि–यह इलहाम नहीं तो क्या था जिसने स्वामी दयानन्द के दिल को मूर्ति पूजा से फेर दिया। इस रात्रि की घटना ने ऋषि दयानन्द पर इतना प्रभाव किया उनके मन में सच्चे शिव को खोजने की तीव्र जिज्ञासा उत्पन्न हुई जिस के लिये वह घर द्वार छोड़कर जीवन भर शिव को खोजते ही रहे अंत में सच्चे शिव को प्राप्त करके ही विश्राम लिया। यह थी तीव्र भावना जो कि उनको इस रात्रि को प्राप्त हुई थी, इसी भावना का दूसरा नाम बोध भी है इसलिये इसको बोध रात्रि भी कहते हैं। इसी संदेश को प्रसार करने के लिए ऋषि ने आर्य समाज की स्थापना की थी।

पुरुषों और महापुरुषों में यही अंतर होता है पुरुषों के सामने रोज घटनायें आती हैं किन्तु उनके मन में कोई असर नहीं होता। महापुरुष का अन्तःकरण निर्मल होता है उस पर मामूली सी घटना विशेष असर कर जाती है। आर्यसमाज के लिए यह पर्व विशेष महत्व रखता है आइये आज के दिन हम भी कुछ बोध प्राप्त करें। वस्तुतः यह पर्व आत्म-निरीक्षण का है अपनी कमियों को पूरा करने के लिये किसी शिव संकल्प को धारण करें तथा ईर्ष्या द्वेष आदि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए अपने जीवन को ईश्वराधन तप तितिक्षा संयमादि द्वारा पुनीत करने का प्रयत्न करे और संगठित होकर ऋषि दयानन्द के सन्देश को घर २ फैलावें। हमको दुःख तो तब होता है जब हम आर्यसमाज में विघटनकारी तत्वों को बढ़ते हुए देखते हैं, सब से पूर्व हम अपने घरों को पूर्ण आर्य बनाने का प्रयत्न करें तथा फिर दूसरों को आर्य बनाने का प्रयत्न करें तभी

लीला देखी उस समय मेरे चित्त मे प्रकार २ के विचार उत्पन्न हुए प्रश्न पर प्रश्न उठने लगे। तब मुझको शका हुई कि जिसकी हमने कथा सुन रखी थी वही यह महादेव है या अन्य क्योंकि वह तो मनुष्य के माफ़क एक देवता है वह बैल पर चढ़ता चलता फिरता खाता पीता त्रिशूल हाथ में रखता हैं डमरू बजाना वर और शाप देता और कैलाश का मालिक है इत्यादि प्रकार का महादेव कथा में सुना था।

अतः चूहे की यह बाल लीला देखकर मेरी बाल बुद्धि को ऐसा प्रतीत हुआ कि जो शिव अपने पाशुपत अस्त्र से बड़े बड़े प्रचण्ड दैत्यों को मारता है क्या उसमें एक निर्बल चूहे को भगाने की शक्ति नहीं। ऐसे बहुत से तर्क मन में उठे तब पिता जी को जगा के पूछा कि यह कथा का महादेव है या दूसरा तब पिता ने कहा क्यों पूछता है तब मैंने कहा कि कथा का महादेव तो चेतन है वह अपने ऊपर चूहों को क्यों चढने देगा इसके ऊपर चूहे फिरते हैं तब उन्होंने कहा कि कैलाश पर जो महादेव रहते हैं उनकी मूर्ति बना और आव्हान करके पूजा किया करते हैं अब कलियुग में उस शिव का साक्षात् दर्शन नहीं होता इसलिए पाषाणादि की मूर्ति बना के उनमें महादेव की भावना रखकर पूजन करने से कैलाश का महादेव प्रसन्न हो जाता है। ऐसा सुनकर मेरे मन में भ्रम हो गया कि इसमें कुछ गड़बड़ अवश्य है ..... पुनः पिता स कहाकि यह कथा का महादेव नहीं है इसकी पूजा मैं क्यों करूं मन में तो श्रद्धा नहीं रही....."यह घटना साधारण मनुष्य के लिए कुछ भी नहीं थी। परन्तु स्वामी दयानन्द जैसे महान् आत्मा पर बिना असर डाले कब रह सकती थी। सच पूछो तो इसी रात्रि उस धार्मिक परिवर्तन की नींव रखी गई जिसने इस देश में नहीं वरन् सुशिक्षित जगत् में हलचल मचा दी। यह किसको मालूम था कि संवत् १८९४ फाल्गुन बदी १० की रात को एक छोटा सा बालक शिवालय में जायगा और उसकी आत्मा ज्ञानरूपी आवाज से एक चूहे और एक मूर्ति के द्वारा इस प्रकार कहेगी कि हे दयानन्द ? मूर्ख लोग परमात्मा

हमारा यह नारा सार्थक हो सकेगा—"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्नि-बोधत।"

"उठो जागो और दूसरों को उठाने का प्रयत्न करो।" इस बोध रात्रि का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है—

रात तो हर रोज आती है सुलाने के लिये।
यह तो निराली रात थी हम को जगाने के लिये॥

——

महात्मा आनन्द स्वामी का सन्देश

ऋषि दयानन्द ने शिव रात्रि की रात को योग प्रेरणा प्राप्त की उसे साकार रूप देने के लिए वो निरन्तर ३० वर्ष तक तपस्या करते रहे। बड़े बड़े विकट स्थानों पर पहुंच कर भी जहां कहीं भी योगी मिला उससे योग विद्या सीखी और उसे अपने जीवन में ढ़ाला।

तब उन्हें शारीरिक, मानसिक तथा आत्मिक बल मिला। तब उन्होंने अनुभव किया कि शिव दर्शन पाने के लिए अष्टांग योग साधन है। योगी दयानन्द के हृदय में यह ज्योति जागती थी कि निराकार परमात्मा के दर्शन के लिए अष्टांग योग का सहारा लेना होगा। शिव रात्रि के दिन प्रभु दर्शन के अभिलाषियों को यह दृढ़ संकल्प करना चाहिए कि वो योग दर्शन में अपनी रूचि बढ़ाएँगे और अपने जीवन को सफल बनाएँगे।

सेवक
आनन्द स्वामी सरस्वती

ऋषि दयानन्द का संस्कृत अध्ययन

लेखक—डा० भवानीलाल भारतीय एम. ए. पी. एच. डी. अजमेर

यह सर्व विदित तथ्य है कि ऋषि दयानन्द की प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा प्राचीन परिपाटी पर हुई थी। यद्यपि उनके पिता सामवेदी ब्राह्मण थे, किन्तु शैवमत के अनुयायी होने के कारण यजुर्वेद के पठन पाठन की प्रणाली उनके कुल में सदा से प्रचलित थी। शैशव पार करते करते उन्होंने यजुर्वेदान्तर्गत रुद्राध्याय समाप्त कर लिया। चौदह वर्ष की आयु पार करते करते उन्होंने सम्पूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया तथा अन्य वेदों का भी किञ्चित अभ्यास कर लिया। वेद पाठ और वेदाभ्यास के बाल्यकाल में पड़े हुये यही संस्कार आगे चलकर उनमें विशेष रूप से उद्‌बुद्ध हुये जबकि वेद प्रचार को स्वामीजी ने अपने जीवन का एक मात्र लक्ष्य बना लिया और वेद के अद्वितीय प्रचारक के रूप में प्रसिद्ध हुये। व्याकरण के शब्द रूपावली, धातु रूपावली आदि प्रारम्भिक ग्रन्थ भी उन्होंने इसी काल में पढ़ लिये थे।

जब वे किशोर वय में प्रविष्ट हुये तो उन्होंने व्याकरण, ज्योतिष तथा वैद्यक के अध्ययनार्थ काशी जाने की इच्छा व्यक्त की। वैराग्य ग्रहण कर लेने के पश्चात् तो स्वामीजी की ज्ञानलिप्सा, और भी तीव्र हुई। ब्रह्मचारी शुद्ध चैतन्य के रूप में वे सर्वात्मना विद्याभ्यास और शास्त्र चिन्तन में लग गये। इस काल में स्वयंपाकी होने के कारण वे अपना पूरा समय अध्ययन के लिये नहीं दे सकते थे। संन्यास ग्रहण करने में उनका एक प्रयोजन यह भी था कि वे समस्त विधि निषेधों से मुक्त होकर एक मात्र अध्ययन में ही लग सकें तथा शीघ्र ही सर्वशास्त्र निष्णात होकर प्रचार कार्य में उद्यत हो सकें।

अपने प्रमुख शास्त्र गुरु स्वामी विरजानन्द की सेवा में पहुँचने से पूर्व स्वामी दयानन्द ने अपने अनेक गुरुओं के सान्निध्य में रहकर शास्त्रा-

भ्यास किया था। कृष्णा शास्त्री से उन्होंने व्याकरण के कुछ ग्रन्थ पढ़े तथा चाणाद कर्नाली निवासी किसी राजगुरु से भी कुछ दिनों तक वेदों का अभ्यास किया। उत्तराखण्ड भ्रमण के समय उन्हें कई विलक्षण अनुभव हुये। टिहरी राज्य में निवास करते समय उन्हें तन्त्र साहित्य के अध्ययन का अवसर मिला और इन ग्रन्थों पर विचार करने के पश्चात् वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि तन्त्र साहित्य को तामस ग्रन्थों की कोटि में ही रखना चाहिये। प्रचलित सदाचार और नैतिक नियमों के विरुद्ध पंच मकार सेवन के जो वीभत्स प्रयोग इन ग्रन्थों में बतलाये गये हैं वे शास्त्रीय मर्यादा के विरुद्ध हैं यह उनकी धारणा बन गई। उत्तराखण्ड प्रवास के पश्चात् स्वामीजी गंगा तट पर भ्रमण करते रहे। इस समय वे संस्कृत भाषा ही बोलते थे। अब तक उन्होंने शिव संध्या, हठ-प्रदीपिका, योग बीज आदि हठ योग के ग्रन्थों का अध्ययन कर लिया था।

स्वामी दयानन्द के संस्कृत भाषा और शास्त्राध्ययन की परिसमाप्ति स्वामी विरजानन्द के निकट हुई 'प्रज्ञाचक्षु दण्डीजी ने प्रतिकूल परि-स्थिति में भी संस्कृत व्याकरण पर असाधारण अधिकार प्राप्त कर लिया था। अपने युग के व्याकरण सूर्य के नाम से विख्यात दण्डीजी अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य के तलस्पर्शी विद्वान् माने जाते थे। जरा-जीर्ण शरीर लेकर वे मथुरा में अपनी पाठशाला का संचालन करते थे। यहाँ सुदूर स्थानों के छात्रों को संस्कृत का अध्ययन कराया जाता था।

कार्तिक शुक्ला २ संवत् १९१७ वि० को स्वामी दण्डीजी की पाठ-शाला में दयानन्द प्रविष्ट हुये। यहाँ उनका अध्ययन २½ वर्ष पर्यन्त चलता रहा। उनके पाठ्यक्रम में अष्टाध्यायी, महाभाष्य, वेदान्तसूत्र तथा कतिपय अन्य ग्रन्थ थे। विरजानन्द की अध्यापन शैली में कुछ वशेषतायें थीं। प्रथम तो उनकी यह निश्चित धारणा थी कि संस्कृत में जितनी शास्त्र सम्पत्ति है उसे आर्ष एवं अनार्ष इन दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। आर्ष ग्रन्थ वे हैं जिन्हें वेद मन्त्रों के रहस्य द्रष्टा ऋषियों ने अपनी ऋतम्भरा प्रज्ञा से लिखा है तथा जिनमें

पूर्ण सत्य का प्रतिपादन किया गया है। इसके विपरीत जो सामान्य बुद्धि रचित ग्रन्थ हैं वे युक्ति, विज्ञान तथा बुद्धि से विरुद्ध हैं तथा कल्पनामूलक, शब्दाडम्बरपूर्ण एवं अतिशयोक्ति युक्त होने के कारण इन्हें त्याज्य ही मानना चाहिये। स्वामी विरजानन्द का यह भी मत था कि भागवतादि पुराण सर्वथा नवीन तथा मनुष्य बुद्धि रचित होने के कारण अप्रामाणिक है।

शास्त्र विषयक दण्डीजी की इन मान्यताओं का स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों के निर्माण पर बड़ा प्रभाव पड़ा। स्वामीजी का शास्त्र चिन्तन दण्डीजी की पाठशाला तक ही सीमित नहीं रहा, वे अपने शेष जीवन में भी शास्त्र मंथन के कार्य में सतत संलग्न रहे। उनका संस्कृत ग्रन्थों का अध्ययन कितना गम्भीर था, यह उनके इस कथन से भलीभाँति स्पष्ट हो जाता है कि मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेकर पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग प्रमाण मानता हूँ। इस प्रकार सहस्रों ग्रन्थों का मन्थन करने के पश्चात उन्होंने अपने धार्मिक मन्तव्यों को स्थिर किया था।

हर एक गुप्त रोग के लिए आज ही मिलें या लिखें:—
वैद्य मोहनलाल सुपुत्र हकीम वीरुमल आर्य-प्रेमी,
आर्यन फार्मेसी आर्यप्रेमी भवन, पोस्ट बाक्स
नं० २७, नला बाजार, अजमेर।

"महर्षि से"

शरर M. A.

क्या से क्या तू ने बनाया
तुझ से ज्योति ले के रजकण,
सूर्य बन कर मुस्कराया।

क्या से क्या....

झुक रहा था जीव जब जड़भूत पाषाणों के आगे।
प्राण हत्या हो रही थी आह निष्प्राणों के आगे।
हो के विह्वल महर्षि विद्रोह पग तू ने बढ़ाया।

क्या से क्या....

वेद के आलोक से संसार आलोकित किया है।
सत्य बल से पापियों के मान को मोहित किया है।
रूढ़ियों के बन्धनों से मुक्त मानव को कराया।

क्या से क्या....

तर्क से बुद्धि को जीत, और करुणा से हृदय को।
नास्तिक क्या रोक पाते, फिर भला तेरी विजय को।
तू ने जगती में किया वह कुछ जो कोई कर न पाया।

क्या से क्या तू ने बनाया,

-०-

ओ३म्

हमारी हार्दिक इच्छा

राष्ट्र बलवान बने, राष्ट्र का हर पुरुष बलवान बने, राष्ट्र की हर स्त्री बलवान बने, ईश्वर की कृपा हो और हमारी सेवा हो तो वह हर हालत में हो सकता है।

भाइयो और बहनों! आज ४३ साल हो गये जो यह कार्य कर रहे हैं। लाखों भाई बहन हमारे इलाज से ठीक होकर अपना जीवन सफल बना चुके हैं और बना रहे हैं। हमारे ४३ साल के अनुभव, बहतरीन इलाज और सफल चिकित्सा की हर जगह, हर शहर, हर गांव में तारीफ ही सुनी जाती है। उसका कारण यह है कि हम सदा यही चाहते हैं कि जो हमारे पास बहन भाई आयें उनका इलाज अपना समझ के करें, जिससे हर कार्य में सफलता प्राप्त कर सकें अपना जीवन आनन्दमय बना सकें, बलवान और निरोगी सन्तान पैदा कर सकें, यही हमारी सदा शुभकामना रही है इसलिए ईश्वर की कृपा और आपकी आशीर्वाद ने सदा हमारा साथ दिया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप भी सदा भाई के तौर पर हमें ही सेवा के लिये चुनेंगे और अपना जीवन मधुर, सुन्दर और सफल बनायेंगे। हमारे इलाज में ४० दिन की दवा २५ रु०, स्पेशल दवाइयां एक मास के लिए ५० रु०, महान् स्पेशल कोर्स २० दिन के लिए १०० रु० मुल्य हैं। देखने और सलाह देने के लिए कोई अलग फ़ीस नहीं है।

सेवा में आपका भाई :-

वैद्य मोहनलाल सुपुत्र हकीम वीरमल "आर्य प्रेमी"

आर्यन फार्मेसी, आर्य प्रेमी भवन, नला बाजार, अजमेर

ओ३म्

सफल जीवन

बन्धुवर, हम आपको क्या विश्वास दिलायें, केवल ईश्वर को साक्षी करके यह विश्वास दिलाते हैं कि हम सच्चे दिल, सच्ची लगन से अपने ४३ वर्ष के कठिन परिश्रम और ईश्वर कृपा से जो कुछ विद्या प्राप्त कर चुके हैं वह सब आपके दुख दूर करने और आनन्दमय जीवन बनाने के लिए सेवारूप में अर्पण कर देंगे, हमारी सदा यह हार्दिक इच्छा रहेगी कि आप दुखी भाई हमारे पुरुषार्थ सेवा और ४३ वर्ष की अनुभव प्राप्त की हुई दवाइयों से पूर्ण स्वस्थ, पूर्ण ताकतवर, हर तरह से बलवान और तेजस्वी बनकर अपना जीवन, अपने लिए, अपने परिवार के लिए, अपने धन्धे के लिए अपनी हर तरह से उन्नति के लिए पूर्ण तरह से प्राप्त कर सकें और जो वक्त जीएं वह वक्त सदा सुखी रहें, समृद्धि से रहें, आनन्दित रहें, हम आपकी सेवा को अपना सौभाग्य मानते हैं।

हमारे पास तीन प्रकार की दवाइयां रहती हैं:-

१. चालीस दिन की दवाइयां २५ रु० की हैं।
२. स्पेशल कोर्स एक मास के लिए ५० रु० का है।
३. महान् स्पेशल कोर्स २० दिन के लिए १०० रु० का है।

हर एक दवा में दो दवाइयां मालिश की रहती हैं, जो चाहें अपनी यथा शक्ति मंगाएं, दिल खोल के खर्च करें, दिल खोल कर लाभ प्राप्त करें। सेवा में मैं हूं आपका भाई-

वैद्य मोहनलाल सुपुत्र हकीम वीरूमल "आर्य प्रेमी"

आर्यन फ़ार्मेसी, आर्य प्रेमी भवन,

पो. बा. २७, नला बाजार, अजमेर।

नोट:- हमारी ओर से अब कोई गश्त का प्रोग्राम नहीं रखा जाएगा इसलिए आप आकर मिलिये या लिखिए।

ओ३म्

आर्यन फ़ार्मेसी अजमेर का अनमोल रत्न

हमारा ४० दिन का कोर्स

क्या आप जानते हैं कि हमारे पूरे कोर्स में हर बीमारी को दूर करके तेज व शक्ति बढ़ाने की क्षमता है ? आर्यन फार्मेसी अजमेर के ४३ वर्ष के कठिन परिश्रम से तैयार औषधि के विषय में निम्नांकित जानकारी है :-

१- ४० दिन का कोर्स- यूनानी और आयुर्वेदिक दवाइयों का निचोड़ है ।

२- हमारे ४० दिन के कोर्स के अन्दर कम से कम ६ दवाइयां होती हैं ।

३- ४० दिन के कोर्स की ६ दवाइयों में सुबह को १ पुड़िया रहती है जो मक्खन या दूध के साथ ली जाती है । इस में मृगांक भस्म, मरजान भस्म, शिंगरफ़ भस्म, चांदी भस्म, सीमाब भस्म, सीप भस्म हैं । जिन में से तबियत मुवाफिक ३ या ४ दवाइयां मिला कर दी जाती हैं ।

नं० २ दवा एक यूनानी या आयुर्वेदिक गोलियां जैसे गोली शिलाजीत या कोई और हैं जो कि पानी के साथ दोपहर को ली जाती है ।

नं० ३ दवा एक चूरन है जिस में मूसली, सालब मिश्री, कौंच, तालमखाना जैसी कई जड़ी बूटियां और उसके साथ तबियत के अनुसार होती है, जो रात को दूध के साथ ली जाती है ।

नं० ४ में २ दवाइयां मालिश की होती हैं । इनके अलावा दमा, बवासीर, भगंदर, खांसी, पेट दर्द, पेचिश, कमर का दर्द, घुटनों का दर्द, हर प्रकार के दर्द, मीठा पेशाब, पुराना बुखार, हाथ पांव की जलन, कब्जियत के लिये इस कोर्स में दवाइयां बदल कर दी जाती हैं । हमारे कोर्स की कीमत २५)

रुपया है। डाक खर्च ४ रुपये अलग होगा। कुल मूल्य २६ रुपये। आर्डर देते समय ५ रु० ऐडवान्स अवश्य भेजिये। ४० दिन की पूरी दवा और पूरा फायदा याने प्रतिदिन दवा का मूल्य १० आना। जिसमें ६ दवाइयां अर्थात् १ दवा की कीमत १० पैसा प्रतिदिन हुई और हमारा अनुभव है कि :-

'हमारा ४० दिन का पूरा कोर्स'

नया जीवन देता है।

४० दिन में हर बीमारी को दूर करके बल, शक्ति, तेज, माँ बहिनों के लिए हमारे पूरे कोर्स का अलग कोर्स है जिसमें ४–५ दवाइयां रहती हैं जो कि प्रत्येक पुराने पेचीदे रोगों को दूर करके शरीर को आरोग्य रखती हैं।

एक और सफ़ाई– हम हर एक मरीज को बिल्कुल अच्छी तरह देखते हैं और ईश्वर को साक्षी जानकर सत्य कह देते हैं कि रोग हम से दूर हो सकेगा या नहीं। ला इलाज जैसी हालत में हम कई भाइयों को साफ़ इन्कार भी कर देते हैं।

हमारा उद्देश्य है–"हर एक को बनाना और न किसी को बिगाड़ना।" देखने की कोई फीस नहीं। ४० दिन के कोर्स के कई प्रमाणपत्र भी हमारे कार्यालय में मौजूद हैं। लेकिन किसी का नाम प्रकट करना हम अपनी शान नहीं समझते। एक बार अवश्य ही हमें सेवा का अवसर दीजिये।

वैद्य मोहनलाल सुपुत्र हकीम बीरूमल आर्य प्रेमी

आर्यन फार्मेसी, 'आर्य प्रेमी' भवन

पो. बा. २७, नला बाजार. अजमेर।

नोट :- हमारे यहां हिन्दी और सिन्धी भाषा में "आर्य प्रेमी" मासिक पत्र निकलता है। पोस्ट कार्ड लिख कर नमूने के लिए मुफ्त मंगवाइये और दिल को बहलाइये।

अमर भारत प्रेस, अजमेर

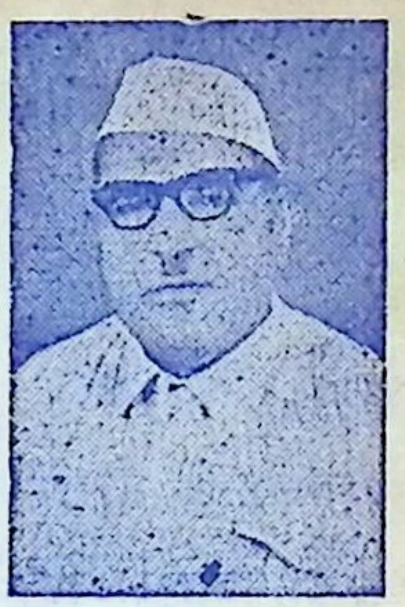

हकीम वीरूमल आर्यप्रेमी

के

४३ वर्ष के

अनुभव और परिश्रम से तैयार की हुई दवाइयों के

चमत्कार को दुनिया जानती है।

मैंने लगातार ३२ वर्ष तक पूज्य पिताजी के चरणों में रहकर जो विद्या प्राप्त की और दुःखी भाइयों की सेवा करते हुए जो अनुभव प्राप्त किया उस विद्या और अनुभव द्वारा गुप्त रोगों में फंसे हुए हज़ारों लोग स्वस्थ हुए हैं।

हम आपको विश्वास दिलवाते हैं कि हमारी फार्मसी में तैयार की हुई दवाइयाँ, आपके रोग, कमज़ोरी और निराशा को दूर कर आपको स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट बना देंगी।

आपका जीवन आनन्दमय बनेगा, और हमें विश्वास है कि आप नई शक्ति और तन्दुरुस्ती प्राप्त कर उस परम पिता परमात्मा के गुण गान करेंगे जिस ईश्वर ने कृपा कर हमारे हाथों में सफलता दी है।

आप रूबरू आयें अथवा रोग परीक्षा पत्र भर कर दवाइयाँ मंगवायें। हर स्थिति में आपको पूर्ण और भरपूर लाभ होगा।

आपका भाई

वैद्य मोहनलाल सुपुत्र हकीम वीरूमल आर्यप्रेमी

आर्यन फ़ार्मसी, आर्य प्रेमी भवन,

नला बाज़ार, अजमेर (राज.)

सर्दियां आ गई हैं

यह समय हाथ से जाने न दें। गर्मी में खर्च की हुई शक्ति फिर से प्राप्त करने के लिए आज ही मिलिये अथवा लिखिये।

किसी भी कारणवश यदि आप ऐसा अनुभव करते हैं कि आपका शरीर, आपका स्वास्थ्य, आपका बल, आपकी शक्ति, आपकी जवानी दिन प्रतिदिन कमजोर और निर्बल होती जाती है, खाया पीया शरीर में कोई शक्ति नहीं ला रहा है तो अपने शरीर की परीक्षा अवश्य करवाएं। यदि किसी कारणवश आप रूबरू नहीं आ सकते तो सारा हाल लिखकर भेजें। हम से "रोग परीक्षा पत्र" मुफ्त मंगवालें। उसे भरकर भेजें और घर बैठे अपना उपचार करावें। रोग छिपाना या इलाज में सुस्ती करना ठीक नहीं है छिपाने या सुस्ती करने से रोग अधिक बढ़ता है। इसलिए तुरन्त मिलिए अथवा लिखिये।

आपका भाई

वैद्य मोहनलाल सुपुत्र हकीम वीरूमल 'आर्यप्रेमी'

आर्यन फार्मेसी, आर्यप्रेमी भवन, नला बाजार, अजमेर।

मुद्रक—पण्डित भगवानस्वरूप न्यायभूषण, वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
प्रकाशक—वैद्य मोहनलाल, वीरूमल आर्यप्रेमी, आर्यन फार्मेसी, आर्यप्रेमी भवन, पो० बा० नम्बर २७, नला बाजार, अजमेर।